एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 02, अंक: 08 (अगस्त, 2025)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

कार्बन फॉर्मिंग : एक सतत कृषि तकनीक

*जाह्नवी कुमारी
लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, जालंधर, पंजाब, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: jahnavipathak25@gmail.com

वातावरण में बढ़ते कार्बन डाईऑक्साइड (CO_2) और अन्य ग्रीनहाउस गैसें ग्लोबल वार्मिंग का कारण बनती जा रही हैं। इसके परिणामस्वरूप औसत तापमान में वृद्धि हो रही है, समुद्र का स्तर ऊँचा हो रहा है और इसका सीधा प्रभाव कृषि पर भी विनाशकारी रूप से पड़ रहा है। इसके समाधान हेतु ही मानव ने इन हानिकारक प्रभावों को रोकने के लिए एक ऐसी प्रणाली अपनाई है जो जलवायु परिवर्तन से लड़ने, खेती के सतत मॉडल को बढ़ावा देने और पर्यावरण को बचाने में मदद करती है। इसी प्रणाली को "कार्बन फॉर्मिंग" (Carbon Farming) कहते हैं।

यह एक ऐसा तरीका है जिसमें ऊर्जा और पेड़-पौधों को इस तरह से प्रबंधित किया जाता है कि वे वातावरण से अधिक से अधिक कार्बन डाईऑक्साइड (CO_2) सोखकर अपनी मिट्टी, पौधों और पारिस्थितिकी तंत्र में संचित कर सके। इस प्रक्रिया से बहुत सारे लाभ मिलते हैं जैसे – मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार, जलधारण क्षमता बढ़ाना, जैव विविधता को संरक्षित करना, सतत और स्वस्थ कृषि व्यवस्था को बढ़ावा मिलना।

इससे फसल की उपज में बढ़ोतरी और किसानों की आय में वृद्धि होती है। कार्बन फॉर्मिंग करने वाले किसानों को "कार्बन क्रेडिट" भी मिलता है। हमारे देश में किसानों के बीच जागरूकता कम होने के कारण यह प्रणाली अभी तक सीमित है। किसान आज तक केवल पारंपरिक खेती तक ही सीमित हैं, सरकारी संस्थानों से किसानों तक कार्बन फॉर्मिंग के सही फायदे की पहुँच अभी तक पर्याप्त स्तर तक नहीं हो पाई है।

कार्बन फॉर्मिंग किसानों के लिए नई आय का स्रोत बन सकती है, लेकिन जागरूकता, भरोसा और सही जानकारी की कमी की वजह से अभी तक यह किसानों के बीच लोकप्रिय नहीं है। अगर कार्बन फॉर्मिंग को सही तरीके से अपनाया जाए तो यह भारतीय कृषि को सतत, पर्यावरण अनुकूल और लाभकारी बना सकती है।